हिन्दी पाक्षिक

महानगर स्तंभ

RNI NO. RAJHIN/2017/70561

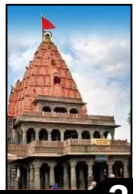

पृष्ठ संख्या.... 3

❐ वर्ष-8 ❐ अंक-15 जयपुर, गुरूवार 1 अगस्त, 2024 ❐ एक प्रति 5 रुपये ❐ कुल पृष्ठ-4

मनु भाकर और सरबजोत सिंह ने 10 मीटर एयर पिस्टल मिश्रित टीम स्पर्धा में भारत के लिए कांस्य पदक जीता

नई दिल्ली। भारतीय निशानेबाज मनु भाकर और सरबजोत सिंह ने शानदार प्रदर्शन करते हुए कांस्य पदक जीत लिया, जिससे पेरिस 2024 ओलंपिक में भारत के पदकों की संख्या दो हो गई है। इस जोड़ी ने 10 मीटर एयर पिस्टल मिश्रित टीम स्पर्धा के फाइनल राउंड में 13 शॉट के बाद 16-10 के स्कोर के साथ कोरिया गणराज्य पर जीत हासिल की। फाइनल राउंड में उनके शानदार प्रदर्शन ने एक असाधारण अभियान समाप्त किया और उनके नाम तथा भारत की पदक तालिका में एक और गौरवपूर्ण उपलब्धि जोड़ दी। पेरिस ओलंपिक

2024 में यह मनु का दूसरा कांस्य पदक भी है। सरबजोत सिंह वर्ष 2019 से खेलो इंडिया खिलाड़ी रहे हैं और उन्होंने 4 खेलो इंडिया गेम्स में भाग लिया है और साथ ही साथ ही वह लक्ष्य ओलंपिक पोडियम योजना खिलाड़ी भी हैं। मनु भाकर भी खेलो इंडिया गेम्स की पूर्व प्रतियोगी रही हैं और लक्ष्य ओलंपिक पोडियम योजना खिलाड़ी हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने पेरिस ओलंपिक 2024 में 10 मीटर एयर पिस्टल मिश्रित टीम स्पर्धा में कांस्य पदक जीतने पर भारतीय निशानेबाज मनु भाकर और सरबजोत सिंह को बधाई दी।

प्रधानमंत्री ने एक्स पर अपनी पोस्ट में कहा कि ÷हमारे निशानेबाज हमें निरंतर गौरवान्वित करते रहे हैं। ओलंपिक में 10 मीटर एयर पिस्टल मिक्स्ड टीम स्पर्धा में कांस्य पदक जीतने पर मनु भाकर और सरबजोत सिंह को बधाई। दोनों ने शानदार कौशल और टीम भावना का प्रदर्शन किया। भारत बेहद प्रसन्न है। मनु के लिए यह लगातार दूसरा ओलंपिक पदक है, जो उनकी निरंतर उत्कृष्टता और समर्पण को दर्शाता है।

भारत का 43वाँ विश्व धरोहर स्थल बना ‘चराईदेव मोईदाम’

नई दिल्ली में 21 से 31 जुलाई, 2024 तक आयोजित 46वीं विश्व धरोहर समिति की बैठक में भारत की सांस्कृतिक विरासत श्रेणी से चराईदेव मोईदाम को सांस्कृतिक श्रेणी में यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल के रूप में नामित किया गया। चराईदेव मोईदाम, असम में शासन करने वाले अहोम राजवंश के सदस्यों के नश्वर अवशेषों को दफनाने की प्रक्रिया थी। यह यूनेस्को द्वारा सूचीबद्ध भारत का 43वाँ विश्व धरोहर स्थल है। विश्व धरोहर समिति, जो प्रतिवर्ष बैठक करती है, विश्व धरोहर से संबंधित सभी मामलों के प्रबंधन और विश्व धरोहर सूची में शामिल किए जाने वाले स्थलों के संबंध में निर्णय लेती है।

ऐतिहासिक संदर्भ

ताई-अहोम लोगों का मानना था कि उनके राजा दिव्य थे, जिसके कारण एक अनूठी अंत्येष्टि परंपरा की स्थापना हुई। राजवंश के सदस्यों के नश्वर अवशेषों को दफनाने के लिए मोइदाम या गुंबददार टीलों का निर्माण। यह परंपरा 600 वर्षों से चली आ रही है, जिसमें विभिन्न सामग्रियों का उपयोग किया गया और समय के साथ वास्तुकला की तकनीकें विकसित होती रही। शुरुआत में लकड़ी और बाद में पत्थर और पकी हुई ईंटों का इस्तेमाल करके मोईदाम का निर्माण किया गया, यह एक सावधानीपूर्वक की जाने वाली प्रक्रिया थी जिसका विवरण चांगरुंग फुकन में दिया गया है, जो अहोमों का एक प्रामाणिक ग्रंथ है। शाही दाह संस्कार से जुड़ी रस्में बहुत भव्यता के साथ आयोजित की जाती थीं, जो ताई-अहोम समाज की पदानुक्रमिक संरचना को दर्शाती थीं। यहां हुए खनन से पता चलता है कि प्रत्येक गुंबददार कक्ष के बीचों बीच एक उठा हुआ भाग है, जहाँ शव को रखा जाता था। मृतक द्वारा अपने जीवनकाल में उपयोग की जाने वाली कई वस्तुएं, जैसे शाही प्रतीक चिन्ह, लकड़ी, हाथी दांत या लोहे से बनी वस्तुएं, सोने के पेंडेंट, चीनी मिट्टी के बर्तन, हथियार, वस्त्र (केवल लुक-खा-खुन कबीले से) को उनके राजा के साथ दफनाया दिया जाता था।

वास्तुकला विशेषताएँ

मोइदाम में विशेष गुंबददार कक्ष होता है, जो प्रायः दो मंजिला होते हैं, जिन तक मेहराबदार मार्गों से पहुंचा जा सकता है। कक्षों में बीच में उभरे स्थान बने हुए थे, जहाँ मृतकों को उनके शाही चिह्नों, हथियारों और निजी सामानों के साथ दफनाया जाता था। इन टीलों के निर्माण में ईंटों, मिट्टी और वनस्पतियों की परतों का इस्तेमाल किया गया, जिससे यहां का परिदृश्य सुन्दर पहाड़ियों में बदल गया।

सांस्कृतिक महत्व

चराईदेव में मोईदाम परंपरा की निरंतरता यूनेस्को मानदंडों के तहत इसके उत्कृष्ट सार्वभौमिक मूल्य को रेखांकित करती है। यह अंत्येष्टि स्थल न केवल जीवन, मृत्यु और परलोक के बारे में ताई-अहोम मान्यताओं को दर्शाता है, बल्कि यह उनकी सांस्कृतिक पहचान का भी प्रमाण है, क्योंकि इनकी जनसंख्या का रुझान अब बौद्ध धर्म और हिंदू धर्म की ओर बढ़ रहा है। चराईदेव में मोईदाम का संकेन्द्रण इसे सबसे बड़े और सबसे महत्वपूर्ण क्लस्टर के रूप में अलग करता है और ताई-अहोमों की अद्वितीय भव्य शाही दफन प्रथाओं को संरक्षित करता है।

संरक्षण के प्रयास

20वीं सदी की शुरुआत में खजाने की तलाश करने वालों द्वारा की गई बर्बरता जैसी तमाम चुनौतियों के बावजूद, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण और असम राज्य पुरातत्व विभाग के ठोस प्रयासों ने चोराईदेव की अखंडता को बहाल और संरक्षित किया है। राष्ट्रीय और राज्य कानूनों के तहत संरक्षित, इस स्थल का प्रबंधन इसकी संरचनात्मक और सांस्कृतिक प्रामाणिकता की सुरक्षा के लिए जारी है।

चराईदेव मोईदाम-अहोम राजवंश के सदस्यों को टीलों जैसे दिखने वाले स्थल में दफनाने की प्रक्रिया

चीन से आकर ताई-अहोम राजवंश ने 12वीं से 18वीं शताब्दी ई. तक ब्रह्मपुत्र नदी घाटी के विभिन्न भागों में अपनी राजधानी स्थापित की। उनमें से सबसे अधिक पवित्र स्थल चराईदेव था, जहाँ ताई-अहोम ने पाटकाई पर्वतमाला की तलहटी में स्थित चौ-लुंग सिउ-का-फ के अधीन अपनी पहली राजधानी स्थापित की थी। यह पवित्र स्थल, जिसे चे-राय-दोई या चे-ताम-दोई के नाम से जाना जाता है, ऐसे अनुष्ठानों के साथ पवित्र किये गए थे जो ताई-अहोम की गहरी आध्यात्मिक मान्यताओं को दर्शाते थे। सदियों से, चराईदेव ने एक टीला श्मशान के रूप में अपना महत्व बनाए रखा है, जहाँ ताई-अहोम राजघरानों की दिवंगत आत्माएँ परलोक में चली जाती थीं।

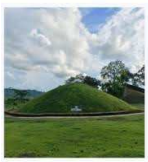

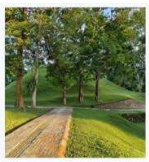

समान संपत्तियों के साथ तुलना

चराईदेव के मोईदाम की तुलना प्राचीन चीन के शाही मकबरों और मिस्र के फिरौन के पिरामिडों से की जा सकती है जो स्मारकीय वास्तुकला के माध्यम से शाही वंश को सम्मानित करने और संरक्षित करने के सार्वभौमिक विषयों को दर्शाता है। दक्षिण-पूर्व एशिया और पूर्वोत्तर भारत के कुछ हिस्सों में फैले व्यापक ताई-अहोम सांस्कृतिक क्षेत्र में, चराईदेव अपने स्तर, संकेंद्रण और आध्यात्मिक महत्व के लिए जाना जाता है। पाटकाई पर्वतमाला की तलहटी में स्थित चराईदेव ताई-अहोम विरासत का एक गहरा प्रतीक बना हुआ है, जो उनकी मान्यताओं, अनुष्ठानों और स्थापत्य कौशल को दर्शाता है। सदियों से चली आ रही शाही अंत्येष्टि से निर्मित परिदृश्य के रूप में, यह आज भी विस्मय और श्रद्धा को प्रेरित करता है, तथा ताई-अहोम के सांस्कृतिक विकास और आध्यात्मिक विश्वदृष्टिकोण के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। सावधानीपूर्वक संरक्षण प्रयासों के माध्यम से संरक्षित, चराईदेव ब्रह्मपुत्र नदी घाटी में ताई-अहोम सभ्यता की स्थायी विरासत का प्रमाण है। चराईदेव के मोईदाम न केवल वास्तुशिल्प और सांस्कृतिक महत्व को दर्शाते हैं, बल्कि ताई-अहोम लोगों के अपनी भूमि और अपने दिवंगत राजाओं के साथ गहरे आध्यात्मिक संबंध की मार्मिक याद भी दिलाते हैं।

संपादकीय

विश्व आबादी के नवीनतम आंकड़े चिंता को बढ़ाने वाले

'विश्व जनसंख्या दिवस' के अवसर पर 11 जुलाई को संयुक्त राष्ट्र की प्रकाशित नई रिपोर्ट दर्शाती है कि 2080 के दशक के मध्य तक, विश्व आबादी अपने उच्चतम स्तर, 10 अरब 30 करोड़ तक पहुँच सकती है। वैश्विक आबादी इस साल के मध्य तक करीब 8 अरब 20 करोड़ तक पहुँच चुकी है और अगले 60 वर्षों में इस संख्या में दो अरब तक की वृद्धि होने की सम्भावना है। वैश्विक आबादी में मौजूदा बदलाव असमान है और जनसांख्यिकी सम्बन्धी तस्वीर अब भी उभर रही है। कुछ स्थानों पर जनसंख्या में तेज गति से वृद्धि हो रही है जबकि अन्य देशों में आबादी बुजुर्ग होती जा रही है। विश्व की कुल प्रजनन दर में गिरावट आ रही है और महिलाएँ, 1990 के दौर की तुलना में अब औसतन एक बच्चा कम पैदा कर रही हैं। 50 फ़ीसदी से अधिक देशों व क्षेत्रों में, प्रति महिला जीवित बच्चों को जन्म देने की औसत संख्या 2.1 से कम है, जोकि आबादी को उसी स्तर पर बनाए रखने के लिए जरूरी है। करीब 20 फ़ीसदी देशों में, प्रजनन दर बेहद कम स्तर पर पहुँच गई है, और महिलाएँ अपने जीवनकाल में 1.4 जीवित बच्चों को जन्म दे रही हैं। इनमें चीन, इटली, कोरिया गणराज्य और स्पेन समेत अन्य देश हैं। रिपोर्ट के अनुसार, 2024 तक, आबादी का आकार कम से कम 63 देशों व क्षेत्रों में अपने उच्चतम स्तर को छू चुका है, जिनमें जर्मनी, जापान, रूसी महासंघ सहित अन्य देश हैं। वर्ष 2070 के दशक के अन्तिम वर्षों तक, 65 वर्ष या उससे वृद्ध व्यक्तियों की संख्या, 18 वर्ष से अधिक आयु वाले व्यक्तियों की संख्या को पार कर सकती है। जनसंख्या में धीमी गति से बढ़ोत्तरी या फिर आबादी में गिरावट मुख्य रूप से उच्च आय वाले देशों में दर्ज की जा रही है। वहीं, निम्न आय, और निम्नतर-मध्य आय वाले देशों में तेज गति से आबादी बढ़ने की सम्भावना है। जनसंख्या वृद्धि के साथ ही, संसाधनों की मांग भी बढ़ेगी, कमजोर शहरीकरण प्रबन्धन के कारण इसका पर्यावरणीय असर भी गहरा होगा। जलवायु परिवर्तन पहले से ही एक बड़ी चुनौती है, और यह इनमें से कुछ देशों को बड़े स्तर पर प्रभावित करेगी। विशेष रूप से उन देशों में जोकि कृषि पर निर्भर हैं और खाद्य सुरक्षा एक समस्या है। भारत, इंडोनेशिया, नाइजीरिया, पाकिस्तान, अमेरिका समेत अन्य देशों में जनसंख्या के 2054 तक बढ़ने की सम्भावना है और यह इस सदी के उत्तरार्ध में अपने उच्चतम स्तर पर पहुँच सकती है। संयुक्त राष्ट्र की यह रिपोर्ट भविष्य की तस्वीर को इंगित करती है। इसके लिए सरकारों को तैयारी करनी होगी। जनसंख्या प्रसार के असमान बदलाव के कारण भविष्य में आबादी के मध्य आयु अंतर अधिक देखने को मिलेगा। साथ ही जनसंख्या के दबाव के कारण वित्तिय, खाद्यान्न, चिकित्सीय भार सरकारों, देशों के लिए बेहतर प्रबंधन करना चुनौती होगा। इसके लिए सभी को अभी से ही तैयारी करनी होगी।

हरिभाऊ किसनराव बागड़े ने राजस्थान के राज्यपाल पद की शपथ ली

जयपुर। राजस्थान के मनोनीत राज्यपाल हरिभाऊ किसनराव बागड़े ने 31 जुलाई को सांय 4 बजे राजभवन में राजस्थान के राज्यपाल पद की शपथ ली। बागड़े ने हिन्दी में ईश्वर के नाम पर राज्यपाल पद की शपथ ली। मुख्य न्यायाधिपति मनिन्द्र मोहन श्रीवास्तव ने बागड़े को राज्यपाल पद की शपथ दिलाई।

मुख्य सचिव सुधांश पंत ने राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु द्वारा जारी राज्यपाल की नियुक्ति का वारंट पढ़कर सुनाया। शपथ लेने के बाद राज्यपाल हरिभाऊ किसनराव बागड़े को राजभवन में गार्ड ऑफ ऑनर पेश किया गया। इस मौके पर मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा, विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी, उप मुख्यमंत्री दीया कुमारी, डॉ. प्रेमचंद बैरवा, केन्द्रीय मंत्रीगण, राज्य मंत्री मण्डल के सदस्यगण, विधानसभा में प्रतिपक्ष नेता टीकाराम जूली तथा अन्य जन प्रतिनिधिगण, न्यायाधीशगण, प्रशासन व पुलिस के वरिष्ठ अधिकारीगण सहित अनेक गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

जेल में मोबाइल पर जिला पुलिस भी करे एक्शनः डीजीपी

जयपुर (नि.सं.)। जेल से सीएम को मारने की दूसरी बार धमकी मिलने के बाद पुलिस मुख्यालय ने सख्ती दिखाते हुए मंगलवार को वीडियो कॉन्फ्रेंस के जरिए डीजीपी यूआर साहू ने सभी जिला एसपी को सख्ती से कार्रवाई करने के निर्देश दिए है। डीजीपी बोले समय-समय प्रभावी तरीके से जेलों में सर्च ऑपरेशन चलाए और उसके बाद जेल में अगर कहीं पर मोबाइल या अन्य आपत्तिजनक चीज मिलती हैं, तो उस मामले की तह तक जाकर जांच करें। मोबाइल कहां से आया और किसके लिए आया। इसके साथ ही डीजीपी ने क्राइम ब्रांच को भी आदेश दिए है कि जेलों में मोबाइल मिलने के संबंध में दर्ज हो प्रकरणों की जांच को मुख्यालय स्तर मॉनिटर करेंगे। जेल या आस-पास से जनरेट हो रहे संदिग्ध नंबरो को तुरंत ब्लॉक करवाएं = पुलिस मुख्यालय ने सभी जिला एसपी को निर्देश दिए है कि जेल या आस-पास से जनरेट हो रहे संदिग्ध नंबरों को तुरंत प्रभाव से ब्लॉक करवाएं।

साधना सक्सेना आर्मी मेडिकल सर्विस की पहली महिला डीजी होंगी

नई दिल्ली (एजेंसी)। लेफ्टिनेंट जनरल साधना सक्सेना नायर को बुधवार (31 जुलाई) को आर्मी की मेडिकल सर्विस का डायरेक्टर जनरल बनाया गया है। साधना 1 अगस्त से पदभार संभालते ही, इस पद पर काम करने वाली पहली महिला बन जाएंगी। पिछले साल अक्टूबर में वायुसेना में एयर मार्शल पद पर प्रमोट किए जाने के बाद साधना को हॉस्पिटल सर्विसेस (आर्म्ड फोर्सेज) की डायरेक्टर जनरल बनाया गया था। इस पद नियुक्त होने वाली भी वे पहली महिला अधिकारी थीं। साधना वायुसेना की दूसरी महिला मेडिकल ऑफिसर हैं, जो एयर मार्शल रैंक तक पहुंची हैं।

इससे पहले साधना को एयर फोर्स ट्रेनिंग कमांड बेंगलुरु हेड क्वार्टर से दिल्ली प्रमोशनल ट्रांसफर किया गया था। वहीं उनके पति केपी नायर 2015 में इंस्पेक्शन एंड फ्लाइट सेफ्टी के छह पद से रिटायर हो चुके हैं। इस तरह साधना और केपी नायर एयर मार्शल रैंक तक पहुंचने वाले देश के पहले कपल हैं।

एयर मार्शल रैंक की दूसरी महिला अफसर

साधना सक्सेना नायर के प्रमोशनल ट्रांसफर के बाद वो दूसरी महिला अधिकारी बनी थीं। जिन्होंने एयर मार्शल रैंक हासिल की है। उनसे पहले ये उपलब्धि एयर मार्शल पद्मा बंदोपाध्याय ने हासिल की।

द्वितीय राष्ट्रीय लोक अदालत में हुआ मुकदमों का निस्तारण

जयपुर। राजस्थान उच्च न्यायालय, जयपुर में न्यायाधिपति, राजस्थान उच्च न्यायलय व कार्यकारी अध्यक्ष, राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण पंकज भंडारी ने 13 जुलाई को राजस्थान उच्च न्यायालय, जयपुर पीठ के परिसर में वर्ष- 2024 की द्वितीय राष्ट्रीय लोक अदालत का शुभारंभ किया। राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण, नई दिल्ली के तत्वावधान में राजस्थान राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण (रालसा) द्वारा आयोजित इस राष्ट्रीय लोक अदालत में कार्यकारी अध्यक्ष ने कहा कि लोक अदालतें कानूनी प्रणाली का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। लोक अदालतों के माध्यम से सभी लंबित मुकदमों का सौहार्दपूर्ण सटीक निस्तारण करना ही उद्देश्य है। भंडारी ने कहा कि लोक अदालत का आयोजन राजस्थान उच्च न्यायालय जोधपुर एवं जयपुर पीठ सहित प्रदेश के सभी अधीनस्थ न्यायालयों, राजस्व न्यायालयों, उपभोक्ता मंचों एवं अन्य प्रशासनिक अधिकरणों में ऑनलाइन एवं ऑफ्लाइन माध्यम से किया जा रहा है।

राष्ट्रीय लोक अदालत के शुभारंभ अवसर पर कार्यकारी अध्यक्ष ने कहा कि लोक अदालत के माध्यम से ऐसे विवादों को भी सुलझाने का प्रयास किया जाता है,

जिनमें विवाद को यदि समय पर नहीं सुलझाया जाए तो वे सालों- साल न्यायिक प्रक्रिया में उलझ जाते हैं। ऐसे प्रकरणों को प्री- लिटिगेशन के माध्यम से न्यायालय में आने से रोका जाता है और आपसी सामंजस्य व समझौते से मामले को निस्तारित किया जाता है। उन्होंने कहा कि बिना न्यायलय जाए ही अगर किसी लंबित प्रकरण में राजीनामा होता है तो यह समाज में सकारात्मकता का उदहारण बनता है। उन्होंने कहा कि लोगों में सौहार्दपूर्ण तरीके से राजीनामा करवाना ही लोक अदालत का मुख्य उद्देश्य है।

कार्यकारी अध्यक्ष, राजस्थान राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण ने बताया कि भारत के संविधान का अनुच्छेद 39ए सभी को न्याय के समान अवसर उपलब्ध कराने हेतु लाया गया था। लोक अदालत हर नागरिक के लिए न्याय प्राप्त करने का व्यय रहित और सुलभ साधन है। माननीय द्वारा यह भी बताया गया कि राष्ट्रीय लोक अदालत पक्षकारों को सुलह के लिए अनुभवी मध्यस्थ एवं सलाहकारों का एक ऐसा मंच उपलब्ध कराती है, जहां विवाद के पक्षकार समाधान की प्रक्रिया में स्वय भाग लेत है और विवादों के समाधान के लिए मार्गदर्शन प्राप्त करते हुए समाधान स्वयं ही तय करते है।

लोक अदालत में प्रक्रियाधीन प्रकरण

भंडारी ने कहा कि लोक अदालतों में प्रस्तुत किए जाने वाले विभिन्न प्रकरणों के तहत गत कुछ महीनों से अधिवक्ताओं से संपर्क किया जा कर समझाइश के प्रयास किये जा रहे हैं। साथ ही, जयपुर उच्च न्यायालय की 4 पीठों तथा जोधपुर उच्च न्यायलय की 5 पीठों में करीब 2500 मुकदमे प्रक्रियाधीन हैं। उन्होंने कहा कि लोक अदालतों द्वारा अभूतपूर्व प्रदर्शन करते हुए प्रथम राष्ट्रीय लोक अदालत में निस्तारित कुल 3,17,485 प्रकरणों की तुलना में इस द्वितीय राष्ट्रीय लोक अदालत में कुल 5,43,283 लम्बित प्रकरणों सहित कुल 27,85,572 प्रकरणों का लोक अदालत की भावना के जरिए राजीनामा निस्तारण किया गया, जिसमें कुल 15,67,37,02,598/- रुपये की राशि के अवॉर्ड पारित किये गये। राजस्थान उच्च न्यायालय की मुख्य पीठ जोधपुर द्वारा 206 प्रकरणों तथा जयपुर पीठ द्वारा 747 प्रकरणों का राजीनामे के माध्यम से निस्तारण किया गया।

देश में कृषि स्टार्ट-अप

भारत सरकार कृषि और संबद्ध क्षेत्रों में कृषि स्टार्टअप को वित्तीय और तकनीकी सहायता प्रदान करके कृषि स्टार्टअप को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध है। कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय देश में स्टार्टअप इकोसिस्टम के पोषण के लिए वित्तीय और तकनीकी सहायता प्रदान करके नवाचार और कृषि उद्यमिता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से 2018-19 से राष्ट्रीय कृषि विकास योजना (आरकेवीवाई) के तहत ष्नवाचार और कृषि उद्यमिता विकासष् कार्यक्रम को लागू कर रहा है। अब तक, कृषि स्टार्टअप के प्रशिक्षण और इनक्यूबेशन तथा इस कार्यक्रम के कार्यान्वयन के लिए 5 नॉलेज पार्टनर्स (केपी) और 24 आरकेवीवाई एग्रीबिजनेस इनक्यूबेटर (आर-एबीआई) स्थापित किए गए हैं। कार्यक्रम के तहत, अवधारणाध् प्री सीड स्टेज पर 5.00 लाख रुपये तक की वित्तीय सहायता और 2020-21 के लिए 1.5 लाख रुपये तक की वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है। कृषि एवं संबद्ध क्षेत्र के उद्यमियों/ स्टार्टअप को अपने उत्पादों, सेवाओं, व्यावसायिक प्लेटफार्मों आदि को बाजार में लॉन्च करने और उन्हें अपने उत्पादों और परिचालनों को बढ़ाने में सुविधा प्रदान करने के लिए बीज चरण में 25 लाख रुपये तक का ऋण दिया जाता है। कार्यक्रम के तहत स्थापित इन नॉलेज पार्टनर्स (केपी) और आरकेवीवाई एग्रीबिजनेस इन्क्यूबेटर्स (आर-एबीआई) द्वारा स्टार्ट-अप्स को प्रशिक्षित और इनक्यूबेट किया जाता है। भारत सरकार विभिन्न हितधारकों के साथ उन्हें जोड़कर कृषि स्टार्टअप को बढ़ावा देने के लिए एक मंच प्रदान करने के लिए कृषि-स्टार्टअप कॉन्क्लेव, कृषि मेले और प्रदर्शनियों, वेबिनार, कार्यशालाओं सहित विभिन्न राष्ट्रीय स्तर के कार्यक्रम आयोजित करती है।

इसके अलावा, भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय ने कृषि स्टार्ट-अप इकोसिस्टम को पोषित करने के लिए 2023-24 से शुरू होने वाले 3 वर्षों के लिए 300 करोड़ रुपये का कृषि त्वरक कोष स्थापित करने की मंजूरी दी है। अब तक कृषि और संबद्ध क्षेत्र के विभिन्न क्षेत्रों में 1708 कृषि स्टार्टअप को 122.50 करोड़ रुपये की तकनीकी और वित्तीय सहायता के साथ समर्थन दिया गया है। यह सहायता विभिन्न केपी और आर-एबीआई को 2019-20 से 2023-24 तक किस्तों में जारी की गई है, ताकि इन स्टार्टअप को आरकेवीवाई के तहत नवाचार और कृषि-उद्यमिता विकास कार्यक्रम के तहत वित्त पोषित किया जा सके। कार्यक्रम के तहत समर्थित कृषि स्टार्टअप विचार से लेकर स्केलिंग और विकास के चरण तक कार्यान्वयन के विभिन्न चरणों में हैं। ये कृषि स्टार्टअप कृषि और संबद्ध क्षेत्रों के विभिन्न क्षेत्रों जैसे कि सटीक कृषि, कृषि मशीनीकरण, कृषि उपस्कर और आपूर्ति श्रृंखला, अपशिष्ट से धन, जैविक खेती, पशुपालन, डेयरी और मत्स्य पालन आदि में काम कर रहे हैं। कृषि स्टार्टअप द्वारा विकसित उभरती प्रौद्योगिकियां और उत्पाद देश में कृषि और संबद्ध क्षेत्रों में खेती की तकनीकों का आधुनिकीकरण करके विभिन्न किफायती और अभिनव समाधान प्रदान कर रहे हैं। ये स्टार्टअप पारंपरिक खेती के तरीकों के सामने आने वाली विभिन्न चुनौतियों का समाधान करने के लिए अत्याधुनिक तकनीक, डेटा एनालिटिक्स और टिकाऊ कार्य प्रणालियों का लाभ उठा रहे हैं।

केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने 26 जुलाई को राज्यसभा में एक लिखित उत्तर में यह जानकारी दी।

फूलों का अपशिष्ट सर्कुलर इकोनॉमी को दे रहा बढ़ावा

जैसे-जैसे भारत स्थिरता और सर्कुलर इकोनॉमी की ओर बढ़ रहा है, अपशिष्ट से संपदा बनाने पर ध्यान केंद्रित करना ही रास्ता है। मंदिरों में खाद बनाने के गड्ढे बनाने और पुनर्चक्रण प्रयासों में मंदिर ट्रस्टों तथा स्वयं सहायता समूहों को शामिल करने से रोजगार के महत्वपूर्ण अवसर पैदा हो सकते हैं। पुजारियों और भक्तों को नदियों में फूलों का कचरा न डालने को लेकर उन्हें शिक्षित करने के लिए आउटरीच कार्यक्रम से कचरे में कमी लाने में मदद मिल सकती है। हरित मंदिर अवधारणा को मंदिरों को पर्यावरण के अनुकूल स्थानों में बदलने की नीतियों में एकीकृत किया जा सकता है। पारंपरिक फूलों के बजाय डिजिटल प्रसाद या स्वाभाविक तरीके से सड़नशील सामग्रियों को बढ़ावा देने से भी फूलों के कचरे को कम करने में मदद मिल सकती है। राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड को पार्कों आदि जैसे हरे भरे स्थानों में फूलों के कचरे का पता लगाने और उसे प्रबंधित करने में शामिल किया जा सकता है।

भारत में फूलों के अपशिष्ट का क्षेत्र नई वृद्धि का अनुभव कर रहा है, जिसका इसके बहुआयामी लाभों से पता चलता है। यह न केवल महिलाओं के लिए सार्थक रोजगार के अवसर प्रदान कर रहा है, बल्कि कचरे को कूड़ा-स्थलों से प्रभावी ढंग से हटाकर पर्यावरण संरक्षण में योगदान दे रहा है। आध्यात्मिक स्थलों से एकत्र किया गया फूलों का अपशिष्ट, जो कि ज्यादातर स्वाभाविक तरीके से सड़नशील होता है, अक्सर लैंडफिल या जल निकायों में समाप्त हो जाता है, जिससे स्वास्थ्य संबंधी खतरे पैदा होते हैं और जलीय जीवन को नुकसान पहुंचता है। संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन रिपोर्ट के अनुसार, अकेले गंगा नदी सालाना 8 मिलियन मीट्रिक टन से अधिक फूलों के कचरे को सोख लेती है। स्वच्छ भारत मिशन-शहरी 2.0 के तहत, कई भारतीय शहर अभिनव समाधान ला रहे हैं। सामाजिक उद्यमी फूलों से जैविक खाद, साबुन, मोमबत्तियां और अगरबत्ती जैसे मूल्यवान उत्पाद बनाने के लिए आगे आ रहे हैं। स्वच्छ भारत मिशन स्थिरता की ओर एक परिवर्तनकारी यात्रा का नेतृत्व कर रहा है, जहां सर्कुलर इकोनॉमी और अपशिष्ट से संपदा का सिद्धांत सर्वोच्च है। इस बदलाव के बीच, फूलों का अपशिष्ट कार्बन फुटप्रिंट में महत्वपूर्ण योगदानकर्ताओं में से एक के रूप में उभर रहा है जिससे इस चुनौती से निपटने के लिए शहरों और स्टार्टअप्स के बीच सहयोगात्मक प्रयास हो रहे हैं।

उज्जैन के महाकालेश्वर मंदिर में हर रोज 75,000 से 100,000 तक दर्शनार्थी आते हैं, जिससे प्रतिदिन लगभग 5-6 टन फूल और अन्य अपशिष्ट उत्पन्न होता है। इसके लिए खास पुष्पांजलि इकोनिर्मित वाहन हैं, जो इस कचरे को एकत्र करते हैं और फिर इसे श्रीटीपीडी प्लांट में संसाधित करके पर्यावरण के अनुकूल उत्पादों में बदल दिया जाता है। शिव अर्पण स्व-सहायता समूह की 16 महिलाएं फूलों के कचरे से विभिन्न उच्च गुणवत्ता वाली वस्तुएं बनाती हैं और इसके लिए उन्हें रोजगार भी दिया गया है। इसके अलावा, इस कचरे से स्थानीय किसानों के लिए खाद बनाया जाता है और यह जैव ईंधन के रूप में भी काम करता है। उज्जैन स्मार्ट सिटी 2022 की रिपोर्ट के अनुसार, अब तक 2,200 टन फूलों के कचरे से कुल 3,02,50,000 स्टिक का उत्पादन किया गया है।

मुंबई के सिद्धिविनायक मंदिर में रोजाना करीब 40,000-50,000 श्रद्धालु आते हैं। कुछ खास दिनों में तो यह आंकड़ा 1,00,000 तक पहुंच जाता है, जो 120 से 200 किलोग्राम फूल चढ़ाते हैं। मुंबई स्थित डिजाइनर हाउस आदिव प्योर नेचर ने एक स्थायी उद्यम शुरू किया है, जो मंदिर में अर्पित किये गए फूलों को प्राकृतिक रंगों में बदलकर कपड़े के टुकड़े, परिधान, स्कार्फ टेबल लिनेन और बड़े थैले के रूप में अलग-अलग वस्त्र बनाता है। वे सप्ताह में तीन बार फूलों का अपशिष्ट इकट्ठा करते हैं, जो 1000-1500 किलोग्राम/सप्ताह होता है। इस कचरे की छंटाई के बाद कारीगरों की एक टीम सूखे फूलों को प्राकृतिक रंगों में बदल देती है। आमतौर पर इस्तेमाल किए जाने वाले गेंदा, गुलाब और अड़हुल के अलावा, टीम प्राकृतिक रंग बनाने और भाप के माध्यम से बनावट वाले प्रिंट बनाने के लिए नारियल के छिलकों का भी उपयोग करती है।

तिरुपति नगर निगम हर दिन मंदिरों से 6 टन से ज्यादा फूलों का अपशिष्ट उठाता है। वहां फूलों के कचरे को इकट्ठा करके उसे दोबारा इस्तेमाल करने योग्य मूल्यवान उत्पादों में बदल दिया जाता है। इसके जरिए स्वयं सहायता समूहों की 150 महिलाओं को रोजगार मिला है। रीसाइकिलिंग का यह काम तिरुमाला तिरुपति देवस्थानम अगरबत्ती के 15 टन क्षमता वाले निर्माण संयंत्र में किया जाता है। इन उत्पादों को रीसाइकिल किए गए कागज और तुलसी के बीजों से भरे कागज से पैक किया जाता है ताकि कार्बन उत्सर्जन शून्य हो।

फूलों के कचरे की रीसाइकिलिंग करने वाले कानपुर स्थित 'फूल', प्रतिदिन विभिन्न शहरों के मंदिरों से फूलों का अपशिष्ट एकत्र करके बड़े-बड़े मंदिरों को इस कचरे की समस्या से निजात दिला रहा है। यह 'फूल' भारत के पांच प्रमुख मंदिर शहरों अयोध्या, वाराणसी, बोधगया, कानपुर और बद्रीनाथ से लगभग 21 मीट्रिक टन फूलों का अपशिष्ट प्रति सप्ताह (3 टीपीडी) एकत्र करता है। इस कचरे से अगरबत्ती, धूपबत्ती, बांस रहित धूपबत्ती, हवन कप आदि जैसी वस्तुएं बनाई जाती हैं। 'फूल' द्वारा नियोजित महिलाओं को सुरक्षित कार्य स्थान, निश्चित वेतन, भविष्य निधि, परिवहन और स्वास्थ्य सेवा जैसे लाभ मिलते हैं। गहन तकनीकी शोध के साथ, स्टार्टअप ने फ्लेदर विकसित किया है, जो पशु चमड़े का एक व्यवहार्य विकल्प है और इसे हाल ही में पेटा (पीईटीए) के सर्वश्रेष्ठ नवाचार शाकाहारी दुनिया से सम्मानित किया गया था।

हैदराबाद स्थित स्टार्टअप, होलीवेस्ट ने फ्लोरजुविनेशन नामक एक अनूठी प्रक्रिया के माध्यम से फूलों के कचरे को पुनर्जीवित किया है। 2018 में स्थापित कंपनी के संस्थापक माया विवेक और मनु डालमिया ने विक्रेताओं, मंदिरों, कार्यक्रम आयोजकों, सज्जाकारों और फूलों का अपशिष्ट पैदा करने वालों के साथ भागीदारी की। वे 40 मंदिरों, 2 फूल विक्रेताओं और एक बाजार क्षेत्र से फूलों का अपशिष्ट इकट्ठा करते हैं और खाद, अगरबत्ती, सुगंधित शंकु और साबुन जैसे पर्यावरण के अनुकूल उत्पाद बनाते हैं। वर्तमान में, होलीवेस्ट 1,000 किलोग्राम/सप्ताह फूलों के कचरे को जल निकायों में जाने से रोक रहा है या लैंडफिल में सड़ने से बचा रहा है।

पूनम सहरावत का स्टार्टअप आरुही दिल्ली-एनसीआर में 15 से अधिक मंदिरों से फूलों का अपशिष्ट इकट्ठा करता है, 1,000 किलोग्राम कचरे को रिसाइकिल करता है और हर महीने 2 लाख रुपये से अधिक कमाता है। सहरावत ने फूलों के कचरे से उत्पाद बनाने के लिए 3,000 से अधिक महिलाओं को प्रशिक्षित किया है।

नए क्रिमिनल लॉज के तहत राजस्थान में ई-साक्ष्य एप लॉन्च

जयपुर। देश में गत एक जुलाई से लागू नवीन आपराधिक कानूनों के तहत डिजिटल साक्ष्यों को एप के माध्यम से संकलित कर उन्हें क्लाउड पर स्टोरेज करने के लिए राजस्थान पुलिस द्वारा नई शुरुआत की गई है। राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र (एनआईसी) के द्वारा ई-साक्ष्य एप तैयार किया है, जिसे 5 जुलाई को पूरे प्रदेश के लिए लॉन्च कर दिया गया। यह जानकारी देते हुए पुलिस महानिदेशक, साइबर अपराध एवं एससीआरबी हेमंत प्रियदर्शी ने बताया कि नए क्रिमिनल लॉज के तहत भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता (बीएनएसएस) में किसी भी अपराध से संबंधित एवीडेंस को डिजिटल रूप में संकलित एवं सुरक्षित करने का प्रावधान किया गया है। इस एप को अनुसंधान अधिकारी (आईओ) अपने मोबाइल पर इंस्टॉल करके घटना से संबंधित साक्ष्यों को डिजिटल फॉर्म में रिकॉर्ड कर सकेंगे। सभी प्रकार के सर्च एवं सीजर की वीडियोग्राफी भी इस एप से की जाएगी। वीडियोज की हैस वेल्यू तत्समय ही निकाली जायेगी एवं न्यायालय में पहुंचने तक इसे सुरक्षित रखा जाएगा। वहीं इस एप पर संकलित साक्ष्यों को सीधे क्लाऊड पर डाल दिया जाएगा। ऐसे में क्लाउड पर सुरक्षित डिजिटल साक्ष्यों से किसी प्रकार की छेड़खानी नहीं की जा सकेगी और पारदर्शी तरीके से अनुसंधान का मार्ग प्रशस्त होगा। प्रियदर्शी ने बताया कि इस एप को 5 जुलाई से पूरे प्रदेश में लागू कर दिया गया है। इससे पूर्व प्रदेश के अलग-अलग पुलिस जिलों से 4000 ट्रायल वीडियो मंगा कर इस एप का परीक्षण किया गया। सफल परीक्षण के बाद इस एप के पूरे प्रदेश में उपयोग के लिए पुलिस मुख्यालय से निर्देश जारी किए गए हैं। अब प्रदेश में फील्ड में घटित होने वाली घटनाओं के बारे में साक्ष्यों की रिकॉर्डिंग इस एप के माध्यम से होगी, यह एप पूरी तरह से सुरक्षित है।

15 अगस्त से शुरू होगा हीरापुरा बस टर्मिनल

जयपुर। परिवहन एवं सड़क सुरक्षा विभाग की अतिरिक्त मुख्य सचिव एवं राजस्थान राज्य बस टर्मिनल विकास प्राधिकरण की अध्यक्ष श्रेया गुहा ने मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के निर्देशों पर कार्यवाही करते हुए 15 अगस्त से अजमेर रोड स्थित हीरापुरा बस टर्मिनल से बसों का संचालन शुरू करने के लिए सभी आवश्यक इंतजाम सुनिश्चित करने के निर्देश दिये। इसके साथ ही उन्होंने जयपुर सिटी ट्रांसपोर्ट सर्विसेज लिमिटेड (जेसीटीएल) के अधिकारियों को शहर के विभिन्न हिस्सों से हीरापुरा के लिए अपनी सिटी ट्रांसपोर्ट सेवाओं के विस्तार के भी निर्देश दिये। गुहा 9 जुलाई को परिवहन मुख्यालय पर हीरापुरा बस टर्मिनल के संचालन को लेकर यातायात पुलिस, जयपुर सिटी ट्रांसपोर्ट सर्विसेज लिमिटेड (जेसीटीएल), परिवहन विभाग एवं रोडवेज के अधिकारियों के साथ आयोजित बैठक की अध्यक्षता कर रही थी। उन्होंने इस संबंध में सभी हितधारक विभागों से तैयार रोडमैप पर कार्य कर सभी जरुरी मूलभूत इंतजाम करने के भी निर्देश दिये। गुहा ने कहा कि जेडीए यात्रियों की सुविधा और बसों के संचालन के लिए टिकट विंडो, छाया के लिए शेड, पेयजल एवं शौचालयों सहित सभी बुनियादी सुविधाएं तय समय में विकसित करें।

उल्लेखनीय है कि 15 अगस्त से सिंधीकैम्प से अजमेर जाने वाली रोडवेज की 25 प्रतिशत बसें हीरापुरा बस टर्मिनल होते हुए अजमेर के लिये संचालित होगी। यह सभी बसें सिंधी कैम्प से चलकर हीरापुरा बस टर्मिनल होते हुए अजमेर जाएगी।

इसके साथ ही इस मार्ग पर संचालित होने वाली सभी स्टेट कैरीज एवं लोक परिवहन सेवा की बसों का संचालन भी हीरापुरा बस टर्मिनल से ही किया जाएगा। गुहा ने बताया कि इससे सिंधीकैम्प पर भीड़भाड़ की स्थिति में कमी आयेगी साथ ही आमजन को जाम की समस्या से भी निजात मिल सकेगी।

इस अवसर पर परिवहन आयुक्त डॉ मनीषा अरोड़ा, जेसीटीएल के प्रबंध निदेशक रामावतार मीना, पुलिस उपायुक्त यातायात सागर, सहित रोडवेज और जेडीए के अधिकारी मौजूद रहें।

प्रधानमंत्री मान, मूल्य, प्रतिष्ठा पर ध्यान केंद्रित कर सबका साथ-सबका विकास किया : राज्यवर्धन

जयपुर(नि.सं.)। राजस्थान सरकार में कैबिनेट मंत्री और झोटवाड़ा से लोकप्रिय भाजपा विधायक कर्नल राज्यवर्धन राठौड़ शनिवार को जयपुर में आयोजित भाजपा राजस्थान की वृहद प्रदेश कार्यसमिति की बैठक में उपस्थित रहे। कर्नल राज्यवर्धन राठौड़ जी ने समस्त सम्मानित जनप्रतिनिधियों, पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं का स्वागत, अभिनंदन कर शुभकामनाएं दीं। कर्नल राज्यवर्धन राठौड़ ने कहा, माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के प्रेरणादायी नेतृत्व और कुशल मार्गदर्शन में देश में लगातार तीसरी बार एनडीए की सरकार बनी है। राजस्थान भारतीय जनता पार्टी, प्रधानमंत्री मोदी की लीडरशिप का अभिवादन करती है। प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में नई कर नीति, फॉरवर्ड लुकिंग नई शिक्षा नीति जैसे अभूतपूर्ण निर्णय लिए गए, महिलाओं को सेना से लेकर सदन तक सम्मान और आगे बढ़ने के अवसर दिए। सांस्कृतिक विरासत को मजबूत किया। प्रधानमंत्री मोदी ने मान, मूल्य, प्रतिष्ठा इसपर ध्यान केंद्रित किया। नए संकल्प और नए लक्ष्य निर्धारित किए। प्रधानमंत्री मोदी ने देशवासियों से आह्वान किया है कि हर व्यक्ति एक पेड़ मां के नाम लगाए। राजस्थान में भाजपा की सरकार ने यह लक्ष्य रखा है कि हम सात करोड़ पेड़ लगाएंगे।

कर्नल राज्यवर्धन ने कहा, जयपुर में भाजपा की बैठक से कार्यकर्ताओं को नई ऊर्जा, नया जोश, नई दिशा और प्रेरणा मिल रही है। भाजपा कार्यकर्ताओं का समर्पण और एकजुटता राजस्थान को प्रगति के मार्ग पर ले जा रही है। भाजपा कार्यकर्ताओं की एकता और समर्पण राजस्थान के भविष्य को उज्ज्वल बना रहा है।

iTVoice® all things tech.

India's Premier IT Magazine & First Daily Tech News OTT

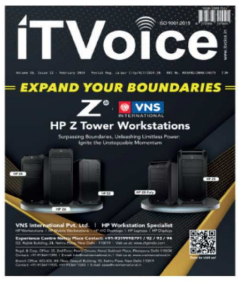

Magazines & Newspapers

Highest Digital Presence

www.itvoice.in

Daily Tech News & Podcasts

Contact for Print & Digital Marketing

+91 141 4014911
info@itvoice.in

ICPL
www.icpljpr.com

Professional IT Support

Domain & Hosting
Web Development
Customized Software Solution
Web Operation
Client / Server Management
Network Maintenance
Service Desk Support
Customized IT Support Services
Dealing in all Major Brands

Informatic Computech Private Limited

Jaipur - Rajasthan (Ph.) +91-141-2280510 md@icpljpr.com

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं मुद्रक तरूण कुमार टांक के लिये महारानी प्रिन्टर्स प्लाट नं. 17, माँ वैष्णो देवी नगर, कालवाड़ रोड, जयपुर से मुद्रित एवं 52/121, वीरतेजाजी रोड, मानसरोवर, जयपुर (राज.) से प्रकाशित। सम्पादक-तरूण कुमार टांक Email: mahanagarstambh@gmail.com